CENTRE FOR WOMEN'S STUDIES
Pt.Ravishankar Shukla University, Raipur
Email : cwsprsuraipur@yahoo.in

// प्रतिवेदन //

एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यक्रम : ट्रांसजेंडर के अधिकारों का संरक्षण 2019 और नियम 2020

Date 31/05/2024

महिला अध्ययन केंद्र, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं के मितवा समिति के संयुक्त तत्वाधान में दिवसीय संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रोफेसर सच्चिदानंद शुक्ला थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विद्या राजपूत, अध्यक्ष मितवा समिति एवं रवीना बेहरा थे कार्यक्रम में मितवा समिति ट्रांसजेंडर को आने वाली समस्या के बारे में उन्होंने अपना एक्सपीरियंस शेयर किया।

कुलपति जी द्वारा ट्रांसजेंडर को बढ़ावा देने के लिए आए हुए ट्रांसजेंडर को संबोधित करते हुए कहा कि वह विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए एडमिशन ले सकते हैं और आगे आ सकते हैं अगर वह एक कदम बढ़ाएंगे तो हम उनके लिए चार कदम बढ़ाएंगे। अगर उनके अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय के नियम ,कायदे, कानून में बदलाव करने की जरूरत पड़े तो हम उसमें संशोधित भी करेंगे। ट्रांसजेंडर को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय मैं तीन ट्रांसजेंडर्स को गार्ड की नौकरी पर रखा गया है। कार्यक्रम में मितवा समिति की बच्चों ने उनके जीवन में आने वाली परेशानियों के बारे में एक्सपीरियंस शेयर किया सभी के साथ।

समायरा यादव (18वर्षीय) : जब मैं पैदा हुआ था तो लड़के के शरीर में हुआ था घर वालों को बहुत खुशी हुआ कि घर में लड़का पैदा हुआ है लेकिन मैं बाकियों से अलग थी आगे जब मैं बड़ी होती गई तो मेरे व्यवहार में लड़कियों के सामान परिवर्तन होने लगा तो घर वालों का व्यवहार मेरे प्रति काफी रूड रहा। स्कूल जाते वक्त सब मुझे ताना मारते थे स्कूल में भी कोई सपोर्ट नहीं करता था नहीं फैमिली भी सपोर्ट करती थी । इस सबसे में डिप्रेशन में चली गई थी इतनी ज्यादा परेशान हो गई थी मैं घर छोड़ दिया। मेरे घर छोड़ने के कुछ दिनों बाद खबर मिली कि मेरी मां का निधन हो गया है लेकिन मैं उनके पास नहीं जा पाई मेरी हिम्मत ही नहीं हुई मुझे बहुत बड़ा धक्का पहुंचा था। डिप्रेशन का शिकार होने के कारण तबीयत खराब रहने लगी थी बचपन से ही मुझे एक बीमारी थी सिकल सेल। मैं 15 दिनों तक एम्स में और मिट्टी कुछ मेरे दोस्त मुझसे मिलने आए तो लगा कि कोई है जो मुझे जिंदा देखना चाहता है कोई चाहता है कि मैं इस दुनिया में रहूं। मैं कहीं स्कूल में एडमिशन लेने का प्रयास भी किया लेकिन स्कूल वाले

इसलिए मना कर देते थे कि बाकी बच्चों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। जैसे तैसे मैंने 12वीं की परीक्षा ओपन से पास की। आज हमारे जी क्या कहना था कि उन्हें भी हर क्षेत्र में अपॉर्चुनिटी मिली ताकि वह आगे बढ़ सके। अगर कोई दंपति बच्चा गोद लेती है तो जैसे लड़का लड़की को गोद लेती है जैसे ट्रांसजेंडर बच्चे को भी गोद लेना चाहिए, इसके लिए रेगुलर नए-नए स्कीम्स सरकार को निकालना चाहिए।

देव जी : मैं ट्रांसमैन हूं इसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं ट्रांसमैन को समझना बहुत जरूरी है। मैं एक लड़की के रूप में पैदा हुआ था जब मैं चार-पांच साल का था तो मुझे अपना बॉडी पसंद नहीं था। मैं लड़कों के कपड़े पहने लगा तो लोगों को लगा जेंडर नोट कंफर्मिंग चाइल्ड है इसे समझ में नहीं आ रहा है कैसे ,कौन से कपड़े पहनना चाहिए। यह लड़की अपने कपड़े डिसाइड नहीं कर पा रही है। जब मैं योनावस्था में था मेरी फिजिकल में चेंज आने लगे मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मेरे साथ क्या हो रहा था मैं अपने शरीर में खुद को ढूंढने की कोशिश करने लगा। बड़े होने के बाद जिस स्कूल में मैं जा रहा था वहां साड़ी पहन के जाना होता था तुम मुझे साड़ी पहने बिल्कुल पसंद नहीं था फिर भी साड़ी पहना था बहुत तकलीफ होती थी। मैं कहना चाहूंगा कि कोई यूनिफॉर्म डिसाइड नहीं कर सकता है जेंडर को ।जब मुझे मेरे बारे में पता चला तो मैं 27 साल का था।

मेरी स्टडी पूरी हो गई।मैं एक ऐसे इंसान को ढूंढ रहा था या मैं ऐसा कुछ ढूंढ रहा था जिससे मुझे मेरे सच्चाई के बारे में पता चले कोई मुझे थाम सके। नहीं मेरी मां मुझे समझते थे और नहीं मेरा भाई कोई सपोर्ट नहीं करता था। मां बोलती थी कि मेरे को आपसे क्यों पैदा हुआ है। 2015 में मैं घर छोड़ दिया जब मैं जब में जाने लगा तो मुझे बोला जाता था कि तुम गर्ल हो या बॉय। बाथरूम जाने में मुझे बहुत दिक्कत होती थी। मेरा मन शांत नहीं था क्योंकि मैं मन से लड़का और शरीर से लड़की थी तुम्हें डरता भी था कहीं आने जाने से की मेरे साथ कुछ गलत मत हो फिर हमें 33 साल का हुआ मैंने हार्मोन सर्जरी के बारे में सुना 2018 में मैंने अपना सर्जरी कराया मुझ में हारमोंस चेंज होने लगे जैसे मेरे ब्रेस्ट में आवाज में मेरा पीरियड बंद हो गया है दाढ़ी मुझे आने लगी मुझ में हार्मोनल चेंजेज होने लगा जब मैं पहली बार दोस्त लिया तो लड़कों जैसा परिवर्तन हुआ। मुझे इतनी खुशी हुई कि मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं अभी पैदा हुआ हो रहा हूं। अब मुझे खुशी है कि मैं एक ही जन्म में दो जिंदगी की लिया हूं एक लड़का था एक लड़की थी। मैं अभी एक अच्छा इंसान बनना चाहता हूं। ट्रांसजेंडर की जिंदगी में सबसे जरूरी उनकी फैमिली होती है फैमिली बच्चों को लड़की और लड़के जैसे ना मान कर सिर्फ अपना बच्चा समझकर परवरिश करें।

आरोही जी : मैं गरिमा की छात्रा हूं। एक ट्रांसजेंडर के रूप में डिस्क्रिमिनेशन उसके चेहरे से आता है। बचपन में ज्यादा दिक्कत नहीं होती है लेकिन जैसे ही 18 के हो जाते हैं उसके बाद बहुत दिक्कत आना स्टार्ट हो जाता है क्योंकि शारीरिक रूप से बहुत सारे चेंज होने लगते हैं। लोग मुझसे पूछा करते थे कि तुम लड़की हो या लड़का तो बहुत स्ट्रगल होता था जवाब देने में। मुझे रेगुलर अपने फेस का सेविंग करना पड़ता था क्योंकि मैं एक लड़के के

शरीर में पैदा हुई थी बार-बार सेविंग करने से ब्लीडिंग भी होती थी। मेरे चेहरे को देखकर सब कमेंट पास किया करते थे इसलिए मैं ज्यादा बाहर आता जाता नहीं था कोई भी प्रोग्राम होता था मैं नहीं जाती थी और जाती भी थी तो चेहरे पर मास्क लगाकर निकलती थी।

गोविन्द जी : समाज ट्रांसजेंडर को लेकर एक्टिव नहीं है जो ट्रांसजेंडर होते हैं अगर उसे सबसे पहले मां और फैमिली समझने लगे, फैमिली का सपोर्ट मिले तो जिंदगी थोड़ी आसान हो जाती है ट्रांसजेंडर सिर्फ सपोर्ट और प्यार ही जाता है। मैं सम्मान से सिर्फ इतना चाहता हूं कि हम जेंडर को भी पढ़ाई में नौकरी में हर क्षेत्र में मौका मिले और सपोर्ट प्राप्त हो। लोग ट्रांसजेंडर को भी अपने दोस्त बनाएं।

गीतू जी : मैं अभी अपनी फैमिली के साथ रहता हूं क्योंकि जब कोई देता नहीं। शुरुआत में मेरी आवाज लड़कियों के समान पतली थी।एक जगह जब मैं जॉब में गया तो खुद को लड़का बताता था तो लोग मुझे बोलते थे तुम तो लड़की जैसे दिखती हो ।घर में भी लड़की जैसे ट्रीट किया जाता था। लेकिन काम के लिए मुझे बोला जाता था कि तुम लड़के जैसे व्यवहार करते हो तो जैसे लड़के काम करते हैं वैसे ही काम करना पड़ेगा सिर्फ काम के लिए मुझे याद किया जाता था। स्कूल में भी बोला जाता था कि तुम लड़की जैसी हो फिर भी लड़के जैसे व्यवहार करते हो लड़के जैसे कपड़े पहनते हो। मैं आपसे कहना चाहूंगा कि किसी को भी लड़का और लड़की जैसे ना ट्रीट कर एक इंसान के रूप में देखना चाहिए।

खुशी ध्रुव जी (रायपुर) : जहां मैं जॉब करती वहां जेंडर डिस्क्रिमिनेशन देखने को मिलता था। वहां जो मेरे सर थे वह मुझे कुछ काम सीखने थे तो मैं वह काम जल्दी सीख जाती थी तो वहां के बाकी कर्मचारियों को लगता था कि ट्रांसजेंडर होकर कहीं हमसे आगे ना निकल जाए आगे ना बढ़ जाए इसलिए मुझे वहां से निकाल दिया गया। फिलहाल में पुलिस नौकरी के लिए प्रिपरेशन कर रही हूं।

इंसिया मैरी : मैं लड़के के शरीर में पैदा हुई थी जैसे-जैसे में बड़ी हुई तो फिलिंग्स लड़कियों जैसा था । मुझे आए दिन घर में स्कूल में ताना देते थे ,मरते थे इसलिए मैंने घर छोड़ दिया और रायपुर में आकर रहने लगी। मैंने बहुत जगह नौकरी की तलाश की काफी दिक्कत होता था। मुझे पंडित रविशंकर शुक्ल में गार्ड के रूप में नौकरी मिल गई आज मैं बहुत खुश हूं।

रवीना मैम : बहुत पहले मुझे सतत विकास के बारे में पता चला की यूजीसी में ट्रांसजेंडर के लिए काम चल रहा है। अध्ययन में भी उनकी भूमिका होना चाहिए। रवीना जी द्वारा सेक्स और जेंडर रोल के बारे में बहुत विस्तार से जानकारी दी। सेक्स मेल, फीमेल और इंटरसेक्स होता है जेंडर रोल समाज के द्वारा थोपा जाता है।समाज जेंडर को

दो प्रकार का बताता है। जो बच्चा लिंग के साथ पैदा हुआ है वो मास्कुलाइन तथा जो बच्चा वेजाइना के साथ पैदा हुआ है वो फैमेनाइन । जेंडर रोल काम के रूप में थोपा जाता है। हमारे आसपास खेल ,खिलौने , कपड़े , भाषा , बोली सभी जगह मर्दाना और औरताना में बटा हुआ है। जेंडर लिंग से नहीं माइंड से होता है। हम अपने शैक्षणिक संस्थान में उनके व्यवहार को देखकर उनके बारे में सोच नहीं उनका लिंग देखकर हमें अपने संस्थान के नियम कायदे कानून में संशोधित करने की जरूरत है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में महाभारत, रामायण में उल्लेख मिलता है ट्रांस डेंजरस का जैसे महाभारत में शिंखड़ी, बृहत्रला जो अर्जुन के रूप में थी, इलादेवी आदि।
सूर्यवंश और चंद्रवंश को शीला देवी के वंशज के रूप में जाना जाता है हीरा देवी 6 महीने पुरुष और 6 महीने स्त्री के रूप में रहती थी। अरावण से कृष्ण जी ने मोहनी के रूप में विवाह किया था अरावण अर्जुन का पुत्र था ।रात में अरावण की बलि दी गई थी। और कृष्णा जी उनकी विधवा के रूप में विलाप करने लगी थे। तमिल नाडु में इसे एक त्यौहार के रूप में मनाया जाता है । थाईलैंड में एक बुद्ध मठ है जिसे ट्रांसजेंडर द्वारा संचालित किया जाता है बुद्ध धर्म में ट्रांसजेंडर्स को निर्वाण का हक मिला है।

रवीना मैम ने ट्रांसजेंडर के लिए लीगल हिस्ट्री के बारे में बात की है उन्हें 2011 में वोटर आईडी के रूप में स्थान मिला था लेकिन निर्जीव के रूप में उन्हें other's के रूप में माना जाता था ।2014 में जब सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आया और ट्रांसजेंडर के रूप में उन्हें स्थान मिला। 2016 में ट्रांसजेंडर के लिए बिल पारित हुआ 2019 में वह बिल पास हुआ। 17 अक्टूबर 2023 में ट्रांसजेंडर को विवाह करने का हक दिया गया। उन्होंने एक एक्ट के बारे में बताया The transgender persons protection of rights act 2019 and rules 2020 इस एक्ट में ट्रांसजेंडर के बारे में उनके अधिकार के बारे में पूर्ण रूप से बताया गया है।

विद्या राजपूत कुलपति जी सर से मुलाकात करके यूनिवर्सिटी में ट्रांसजेंडर को जॉब दिलाने के लिए बात की थी इन्होंने अपने स्वयं के लिखित है कविता का जिक्र किया जो बहुत ही दिल को छू जाने वाली है। उन्होंने अपने बारे में बताते हुए कहा कि जब मैं 14 -15 साल की थी तो मुझे ताना मारा जाता था भेदभाव सहन करना पड़ा तो मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मेरे साथ क्या हो रहा है मैं कौन हूं मैं लड़के के रूप में पैदा हुई लेकिन मैं लड़की जैसे सोचती थी। 1997 में रायपुर आई और मैं इस कविता को लिखा जब मैंने लड़की और लड़के को देखा और अपने आप में मुझे लगा कि मैं दोनों हूं नहीं मैं लड़का हूं और नहीं मैं लड़की हूं बल्कि एक संपूर्ण इंसान हूं और उन लोगों से बेहतर हूं। मैं 2012 में ट्रांसजेंडर कमेटी के साथ जुड़ी और उसमें विकास होता है । उन्होने ने बताया कि उनके सस्था से 22 ट्रांसजेंडर का चयन पुलिस विभाग में हुआ है कुछ टाटा स्टील में कंप्यूटर ऑपरेटर का काम करते हैं गार्ड की नौकरी करते हैं अलग.अलग आर्गेनाइजेशन में कार्यरत है ।

जमीनी स्तर पर जेंडर समानता ही आदर्श समाज

किन्नरों के समक्ष आज भी रोजगार की दिक्कतें

महिला अध्ययन केंद्र के तत्वाधान में जुटे बुद्धिजीवी और ट्रांसजेंडर्स

रायपुर। पंडित रविशंकर शुक्ल विवि के महिला अध्ययन केंद्र द्वारा छत्ता मितवा संकल्प समिति के सहयोग से एक दिवसीय संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ट्रांसजेंडर के प्रति संवेदनशीलता लाना तथा उभयलिंगी व्यक्ति अधिकारों के संरक्षण कानून 2019 तथा नियम 2020 के प्रावधानों के प्रति जागरूक करना था। इस कार्यालय में समुदाय के व्यक्तियों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा भी अपने अपने विचार व्यक्त किए गए। समाजकार्य विभाग के प्राध्यापक एलएस गजपाल ने कहा, एक आदर्श समाज का निर्माण तभी हो सकता है, जब वहां पर सही मायने में जेंडर समानता की बात होती है। समाजकार्य विभाग के दो शोधार्थियों ने ट्रांसजेंडर विषय पर पीएचडी की है। मनोविज्ञान विभाग तथा महिला अध्ययन केंद्र डायरेक्टर प्रो.रीता वेणुगोपाल सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं, प्राध्यापक तथा तृतीय लिंग समुदाय के व्यक्ति उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय ने सुरक्षा गार्ड के रुप में की है किन्नरों की नियुक्ति

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों भी सुलभ शिक्षा का लाभ प्रदान करने की कोशिश की जा रही है। विश्वविद्यालय में तीन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की सिक्योरिटी गार्ड के रूप में नियुक्ति की गई है तथा भविष्य में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की शिक्षा के लिए अनेक व्यवस्थाएं की जाएगी। आरोही ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों पर बात की। गीतू सोनबेर ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के वृद्धावस्था की समस्याएं तथा उसके समाधान पर बात की। खुशी ध्रुव ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के पारिवारिक मुद्दों, समायरा ने एजूकेशन, इंसिया मिली ने रोजगार से संबंधित समस्याओं पर बात की। किन्नर आवास गरिमा गृह के प्रोग्राम मैनेजर पापी देवनाथ ने ट्रांस व्यक्ति के जीवन से संबंधित चुनौतियां को अपने अनुभवों के साथ साझा किया।

हां किन्नर हूं...

मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर परिषद की विशेषज्ञ रवीना बरीहा ने उभयलिंगी व्यक्ति अधिकारों के संरक्षण कानून 2019 व रूल्स 2020 के सभी प्रावधानों की जानकारी दी। उन्होंने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के इतिहास को बड़े ही सूक्ष्मता के साथ सब लोगों के समक्ष रखा। छत्तीसगढ़ मितवा संकल्प समिति की अध्यक्ष विद्या राजपूत ने अपने उद्बोधन अपनी कविता हां किन्नर हूं से शुरुआत की। अपने वक्तव्य में विद्या राजपूत ने ट्रांसवीमन के जीवन से संबंधित समस्याओं को अपने जीवन के अनुभव के साथ जोड़कर सामने रखा। उन्होंने बताया कि स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रम में ट्रांसजेंडर विषय को सम्मिलित करना कितना महत्वपूर्ण है। उन्होंने अनेक केस स्टडी के माध्यम से कार्यशाला में बताया कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की आजीविका और शिक्षा के संबंध में उचित कदम उठाने की आवश्यकता है।

पत्रिका

वृहद अभियान "निजात" अभियान के दुष्प्रभावों को बताया। जीवन जीने के लाभ बताए। वे भीड़ में चुने हुए लोगों में से एक के रूप में चमक न जाएं।

#CityEvent

वर्कशॉप में बोले रविवि के कुलपति शुक्ला

ट्रांसजेंडर कम्युनिटी की शिक्षा के लिए रविवि करेगा पहल

पत्रिका ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

रायपुर. रविवि के महिला अध्ययन केंद्र ने छत्तीसगढ़ मितवा संकल्प समिति के सहयोग से एक दिवसीय संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता जागरूकता लाना और उभयलिंगी व्यक्ति अधिकारों का संरक्षण कानून 2019 तथा नियम 2020 के प्रावधानों के प्रति जागरूक करना था।

कार्यक्रम का प्रारंभ समाजकार्य विभाग के प्राध्यापक एल एस गजपाल के वक्तव्य से हुआ। उन्होंने कहा कि एक आदर्श समाज का निर्माण तभी हो सकता हैं, जब वहां पर सही मायने में जेंडर समानता की बात होती हैं। उन्होंने बताया समाज कार्य विभाग से दो व्यक्तियों ने पीएचडी में ट्रांसजेंडर विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। कार्यक्रम के अगले वक्ता रविवि के कुलपति प्रोफेसर सच्चिदानंद शुक्ला थे।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की यह प्रतिबद्धता है कि नई शिक्षा नीति 2020 के तहत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों भी सुलभ शिक्षा का लाभ प्रदान करना है। उनके प्रयास से विश्वविद्यालय में तीन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की सिक्योरिटी गार्ड के रूप में नियुक्ति की गई है तथा भविष्य में उन्होंने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की शिक्षा के लिए अनेक व्यवस्थाएं प्रारंभ करने की बात कही।

कॉलेज सिलेबस में शामिल हो सिलेबस

छत्तीसगढ़ मितवा संकल्प समिति की अध्यक्ष विद्या राजपूत ने अपनी कविता हां किन्नर हूं... से शुरुआत की। अपने वक्तव्य में विद्या राजपूल ने ट्रांस वुमन के जीवन से संबंधित समस्याओं को अपने जीवन के अनुभव के साथ जोड़कर के रखा तथा उन्होंने बताया कि स्कूल और कॉलेज के पाठ्यश म में ट्रांसजेंडर विषय को सम्मिलित करना कितना महत्वपूर्ण है। उन्होंने अनेक केस स्टडी के माध्यम से कार्यशाला में बताया कि ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के आजीविका और शिक्षा के संबंध में उचित कदम उठाने की आवश्यकता है।

ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के मुद्दों पर एकदिवसीय जागरूकता कार्यशाला

रायपुर (अग्रदूत संवाददाता)। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र द्वारा छत्तीसगढ़ मितवा संकल्प समिति के सहयोग से एक दिवसीय संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता जागरूकता करना तथा उभयलिंगी व्यक्ति अधिकारों का संरक्षण कानून 2019 तथा नियम 2020 के प्रावधानों के प्रति जागरूक करना था. इस कार्यशाला में समुदाय के व्यक्तियों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के द्वारा भी अपने अपने विचार व्यक्त किए गए. कार्यक्रम का प्रारंभ समाज कार्य विभाग के प्राध्यापक श्री एल एस गजपाल जी के वक्तव्य से हुआ। उन्होंने कहा कि एक आदर्श समाज का निर्माण तभी हो सकता है, जब वहां पर सही मायने में जेंडर समानता की बात होती है. उन्होंने बताया समाज कार्य विभाग से दो व्यक्तियों ने पीएचडी में ट्रांसजेंडर विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। कार्यक्रम के अगले वक्ता रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सच्चिदानंद शुक्ला थे. उन्होंने इस आयोजन के लिए महिला अध्ययन केंद्र को बहुत-बहुत शुभकामनाएं दी हैं. उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की यह प्रतिबद्धता है कि भारत सरकार द्वारा जारी नई शिक्षा नीति 2020 के तहत ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों भी सुलभ शिक्षा का लाभ प्रदान करना है. उनके प्रयास से विश्वविद्यालय में तीन ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की सिक्योरिटी गार्ड के रूप में नियुक्ति की गई है तथा भविष्य में उन्होंने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की शिक्षा के लिए अनेक व्यवस्थाएं प्रारंभ करने की बात कही. कार्यक्रम के अगले वक्ता में [illegible] ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों पर बात किया तथा इसी प्रकार [illegible] सोनबेर ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के वृद्धावस्था की समस्याएं तथा उसके समाधान पर बात की अगले वक्ता के रूप में [illegible] ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के पारिवारिक मुद्दों पर बात की तथा [illegible] ने एजुकेशन में आने वाले चुनौतियों पर चर्चा की. इसी तरह [illegible] ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के रोजगार से संबंधित समस्याओं पर बात की तथा उसके उचित समाधान सुझाए. मुख्य वक्ता के रूप में [illegible], प्रोग्राम मैनेजर [illegible] ने ट्रांसव्यक्ति के जीवन से संबंधित चुनौतियों को अपने अनुभवों के साथ साझा किया. कार्यक्रम में अगले मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर परिषद के [illegible] ने उभयलिंगी व्यक्ति अधिकारों के संरक्षण कानून 2019 व रूल्स 2020 के सभी प्रावधानों की जानकारी दी तथा इसी जेंडर सेक्स और सेक्स, सेक्सुअलिटी के बीच अंतर को स्पष्ट किया।